Volume-5, Issue-3, March - 2016 • ISSN No 2277 - 8160 IF : 3.62 | IC Value 70.36

Research Paper Education

रामदरश मिश्र की कहानियों में अन्धविश्वास

सतबीर सिहँ

अन्धविश्वास विकास के लिए बाधक है। भारतीय समाज में व्याप्त अंधविश्वास की जड़ें इतनी गहरी हैं कि उन्हें उखाड़कर फैंकना मुश्किल कार्य है। धार्मिक मान्यताओं, अज्ञान, रूढ़ियाँ, परम्पराओं के चलते समाज में तरह–तरह का अंधविश्वास देखने को मिलता है। समाज में व्याप्त अन्धविश्वास को मिश्र जी ने देखा, महसूस किया और अपने साहित्य में वर्णित कर दिया। उनकी कहानियों में वर्णित अन्धविश्वास इस प्रकार से है– संतान के लिए पूजा–अर्चना, मनोतियाँ, सफलता के लिए तावीज, शक. ुन–अपशकुन, भूत–प्रेत, मंत्र– तंत्र, धार्मिक मान्यताएँ आि. द। समाज पर पड़ने वाले अंधविश्वास का प्रभाव जीवन पर पड़ने वाले असर का चित्रण रामदरश की कहानियों में स्पष्ट झलकता है। अज्ञान मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है। इसी अंधविश्वास के चंगुल में फंसे हुए मानव का चित्रण उन्होंने निम्न बिन्दुओं के माध्यम से दर्शाया है।

1. भभूत पर विश्वास– 'अकेला मकान' कहानी में गाँव की एक औरत को कोई संतान नहीं थी। वह छिप–छिप कर रोती थी। उसकी सास और उसका मरद उसे ताने देते थे। एक दिन वह औरत जगरानी भुआ के पास आयी और अपना हाल बताया। जगरानी सब की मदद करती है। उसने सुन रखा था कि कस्बे में एक बाबा जी आए हुए हैं और वो संतान के लिए भभूत देते हैं। वह उस औरत के लिए भभूत लाती है। तब सुरेश उससे कहता है कि क्या आप इसमें विश्वास करती हैं तब जगरानी सुरेश को समझाते हुए कहती है– ''मेरे विश्वास करने न करने की बात नहीं है रे। लोग तो करते है, मैं सोचती हूँ शायद इसी तरह किसी का दुख कम हो जाए।'' 1 यहाँ दिखाया गया है कि गाँव वालों की श्रद्धा थी कि बाबा जी की भभूत से संतान की प्राप्ति होती है। यहाँ संतान प्राप्ति की इच्छा से अन्धविश्वास में विश्वास रखने वाले लोगो की मानसिकता पर प्रकाश डाला है।

2. शकुन–अपशकुन– इसी कहानी में जगरानी बुआ शकुन–अपशकुन को देखकर लोगों को सलाह देती थी। सुरेश के पिता जी बैल खरीदने के लिए गये हुए थे। आठ दिनों के बाद भी वे वापस नहीं लौटे, तब सुरेश की माँ जगरानी के पास गई। शकुन देखने के लिए। जगरानी ने सूप और लोटा मँगवाया '' सूप का उपरी सिरा उंगलियों से पकड लिया और नीचे के हिस्से पर लोढ़ा रख दिया और सवाल किया कि मेरे भईया कुशल से है न? सूप हिलने लगा। वे बीमार है, सूप नहीं हिला। लो भवजी, भ. ईया कुशल से हैं। चिंता मत करो।'' 2 और सचमुच सुरेश के पिता कुछ देर बाद बैलों को लेकर आ गए इस प्रकार शकुन के माध्यम से सही गलत देखना यहाँ बताया गया है। 'अभिशप्त राग' कहानी अन्धविश्वास की कहानी है। एक ज्योतिषि राजेश्वरी को कहता है कि तुम्हारी बेटी का लड़का मुन्ना जो नवजात शिशु है के कारण दुष्ट ग्रहों का उदय होगा जिससे तुम्हारे बेटे मोहन का अहित होगा। ज्योतिष जैसे अन्धविश्वास के कारण राजेश्वरी के परिवार की हुई दुर्दशा का प्रभावशाली वर्णन रामदरश मिश्र ने किया है। अपने बेटे मोहन की हालत देखकर राजेश्वरी कहती है – ''मुन्ने देख तो तेरे मामा का क्या हाल हो गया है। अपना सराप समेट ले देवता। क्या होगा भगवान, क्या होगा भगवान?'' 3 यहाँ अन्धविश्वास का चित्रण है।

3. भूत–प्रेत– आज के वैज्ञानिक युग में भी ग्रामीण और कुछ हद तक शहरी लोग भी भूत–प्रेत, चुडैल, और डायन पर विश्वास करते हैं। भूत जैसी काल्पनिक और मनगंढ़त बातों पर विश्वास करने लगे हैं। 'अभिशप्त राग' कहानी में राजेश्वरी के बेटे मोहन का चित्रण हुआ है जो दिमाग से कमजोर है। राजेश्वरी के साथ–साथ गाँव वालों को लगता है कि मोहन को भूत ने पकड़ लिया है।– ''लोग राय देने लगे और सोखों के लिए दौड़ धूप करने लगे।'' 4 यहाँ लोगों का भूत प्रेत में विश्वास दिखाया है।

4. मनौतियाँ– समाज में विविध स्तर के लोग रहते हैं। सबके अपने–अपने सपने होते हैं अपनी–अपनी इच्छाएँ होती हैं उनकी पूर्ति के लिए वे अपने इष्ट देव की शरण में जाकर मनौतियाँ माँगते हैं। 'एक कहानी लगातार' में डॉ0 रामदरश मिश्र जी चित्रित करते हैं कि लाला चंपतलाल देवी का जागरण करते हुए मनौती माँगते हैं– ''हे मइया, लॉटरी का इनाम मिल जाए तो तुम्हारे इस भक्त का दुःख दलिदर दूर हो जाए।'' 5 इस प्रकार लोग मनोतियाँ मानते हैं और उनका विश्वास है कि उनकी इच्छा अवश्य पूरी होगी।

5. मंत्र–तंत्र– भारतीय समाज में आज भी मंत्र–तंत्र, जादू टोना, झाड़ फूंक पर विश्वास किया जाता है लोगो के अज्ञान का लाभ उठाकर ये पांखड़ी बाबा उन्हें ठगते

हैं। मिश्र जी ने मंत्र–तंत्र जैसे अंधविश्वास का वर्णन अपनी कहानियों में किया है। 'सर्पदंश' कहानी में भवानी बाबा साँप का जहर उतारने का मंत्र जानते है गोक. ुल खेत से मक्के की बालियाँ तोड़ने जाता है वहाँ उसे साँप ने काट लिया लोग उसे भवानी बाबा के पास लाते हैं। बाबा मंत्रोच्चार करते हैं। अचानक गोकुल ने आँखें झपकाई– ''भवानी बाबा को लगा कि उसका मंत्र काम करने लगा है। उनकी जाती हुई आस्था लौट आई। वे फिर वेग से मंत्र मारने लगे और चमत्कार हो गया। गोकुल ठीक होने लगा।'' 6 यहाँ लोगों को लगा कि भवानी बाबा के मंत्र तंत्र के कारण ही उसकी जान बच पाई है। लोगो की आस्था का चित्रण इस कहानी में किया गया है।

6. सफलता के लिए तावीज– आजकल लोग कर्म से अधि ाक भाग्य पर विश्वास करने लगे हैं। सफलता हमेशा परि रश्रम से मिलती है। किसी तांत्रिक के तावीज से नहीं इस बात को लोग नहीं समझते। इसी कारण अमीर–गरीब, ग्रामीण–शहरी, शिक्षित–अशिक्षित आदि किसी न किसी रूप में अन्धविश्वास से जुडे हुए हैं और सफलता के लिए किसी लोकेट या तावीज का सहारा लेते नजर आते हैं। लोग सच्चाई और परिश्रम से मुँह मोड़कर काल्पनिक डर से अंधविश्वास की तरफ कदम बढ़ाते हैं। धीरे–धीरे इसमें इतना फँस जाते हैं कि इससे बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है, लेकिन 'साढ़े साती' कहानी का नायक वास्त. विकताओं को समझ लेता है। वह कहता है – '' अरे वो शनिचरा तुझसे मैं बहुत डर लिया रे, अब आ जा, जो करना हो सो कर ले। तुझे ऐसी पटकी दूँगा कि तु भी याद रखेगा।'' 7 अतः इस कहानी में सफलता के लिए गंड़ा, तावीज और लोकेट का इस्तेमाल करने वाले लोगों की मानसिकता का वर्णन किया है।

डॉ0 अमृत खाडपे ने 'कहानीकार रामदरश मिश्र' नामक पुस्तक में भी कुछ इसी तरह का वर्णन किया है। उन्होंने जन्मपत्री में विश्वास रखने वाले लोगों का 'भविष्य' कहानी के माध्यम से बताया है– ''जन्मपत्रियों का मिलान वास्त. विक जीवन से मेल नहीं खाता जन्म पत्रिका देखने की बजाय यह देखना उचित होगा कि दोनों में शारीरिक और मानसिक मेल हो। आर्थिक अभाव न हो परन्तु विवाह तय करते समय यह न देखकर जन्मपत्री देखी जाती है। मन नहीं गुण मिलाए जाते हैं।'' 8 ऐसा उन्होंने इस कहानी के विश्लेषण के आधार पर कहा है।

अतः सारान्श रूप में कहा जा सकता है कि मिश्र जी की कहानियों में समाज में व्याप्त अन्धविश्वास की झलक मिलती है।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

1. दस प्रतिनिधि कहानियाँ, लेखक रामरदश मिश्र, पृ0 98,
2. दस प्रतिनिधि कहानियाँ, लेखक रामरदश मिश्र, पृ0 95,
3. इकसठ कहानियाँ, लेखक रामदरश मिश्र, पृ0 49
4. इकसठ कहानियाँ, लेखक रामदरश मिश्र, पृ0 42
5. एक कहानी लगातार, लेखक रामदरश मिश्र, पृ0 17
6. चर्चित कहानियाँ, लेखक रामदरश मिश्र, पृ0 133
7. एक कहानी लगातार, लेखक रामदरश मिश्र, पृ0 22
8. कहानीकार रामदरश मिश्र, लेखक अमृत खाडपे, पृ0 79 विद्या प्रकाशन, कानपुर, संस्करण 2012